पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय 2

पौलुस और गलातियों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय......1

पृष्ठभूमि......1

- मिशनरी यात्रा......2
- समस्याएँ......3
  - अन्यजातियों का भारी मात्रा में विश्वास में आना......3
  - झूठे शिक्षक......3

विषय सूची......5

- अध्यादेश/अतिरिक्त सन्देश......5
- समस्या का परिचय......5
- ऐतिहासिक अभिलेख......6
  - बुलाहट और प्रशिक्षण......6
  - अगुवों से मुलाकात......6
  - पतरस से मतभेद......7
- धर्मविज्ञानी प्रमाण......7
  - आरम्भिक अनुभव......8
  - अब्राहम का विश्वास......8
  - वर्तमान अनुभव......10
  - अब्राहम की पत्नियाँ और पुत्र......10
- व्यवहारिक उपदेश......11
  - मसीह में स्वतंत्रता......11
  - आत्मा की सामर्थ......12
  - दिव्य न्याय......12

धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण......13

- मसीह......13
- सुसमाचार......14
- व्यवस्था......15
- मसीह के साथ एकता......16
- पवित्र आत्मा......17
- नई सृष्टि......18

उपसंहार......18

पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय दो

पौलुस और गलातियों

परिचय

एक बार मैं ने एक महिला की कहानी सुनी जिसका विवाह किशोरावस्था में ही हो गया था। युवा होने के कारण, वह वास्तव में अपने नये वयस्क जीवन के लिए तैयार नहीं थी। अभी अधिक समय बीता भी नहीं था,कि वह चिन्तित रहने लगी, और उसे अपने बचपन के आराम की याद आने लगी। अत:, एक दिन जब उसका पति काम पर गया था, वह चुपके से अपने माता-पिता के आँगन में घुसी और अपने पुराने खेलने के कमरे में छिप गई। अन्तत: उस शाम उसके पति ने जब उसे पाया, तो उसने उसके काँपते हाथों को पकड़ा, और कोमलता से उसे घर वापस ले गया। वह जानता था कि एक वयस्क के रूप में जीना उसके लिए कठिन था, परन्तु वह यह भी जानता था कि अब उसे अपने बचपन को पीछे छोड़ना था। उसके जीवन में एक नया दिन आया था, और यह समय था कि वह अपने पति के साथ वयस्क जीवन के आश्चर्यों और चुनौतियों का आनन्द ले।

पहली सदी में, मसीही कलीसिया में कुछ ऐसा ही हुआ। अधिकाँश आरम्भिक मसीही यहूदी थे जो धार्मिक रिवाजों और यहूदी नियमों के संरक्षण में बड़े हुए थे। परन्तु जब इन यहूदियों ने मसीह के पीछे चलना शुरू किया, तो परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता बदल गया। वे आत्मिक परिपक्वता के स्तर तक पहुँचे क्योंकि मसीह में उन्होंने परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को पा लिया था। परन्तु कुछ समय पश्चात्, इनमें से कुछ यहूदियों को उनकी पुरानी यहूदी रीतियों की पहचान और सुरक्षा की याद सताने लगी, और वे अपने मसीही विश्वास में अपनी विरासत के पुराने तत्वों को मिलाने लगे और इस बात पर ज़ोर देने लगे कि दूसरे भी ऐसा ही करें।

हमारी श्रृंखला *पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र* के इस अध्याय का शीर्षक है- पौलुस और गलातियों। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि गलतियों की कलीसियाएँ कुछ यहूदी व्यवहारों को पुनर्जीवित करने के द्वारा आत्मिक बचपन में लौट गई थीं। और हम यह भी देखेंगे कि पौलुस ने इन पीछे देखने वाले मसीहियों के बारे में क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की।

पौलुस और गलातियों का हमारा अध्ययन तीन हिस्सों में विभाजित होगा। पहले, हम गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि को देखेंगे। दूसरा, हम गलातियों को लिखी उसकी पत्री की विषय सूची को देखेंगे। और तीसरा, हम जाँचेंगे कि यह पत्री किस प्रकार पौलुस के केन्द्रिय धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों, अन्त के दिनों के उसके सिद्धान्त, या युगान्त विज्ञान को प्रकट करती है। आइए पहले हम गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि को देखते हैं।

पृष्ठभूमि

पौलुस ने अपनी सारी पत्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते समय लिखा। अत:, गलातियों को लिखी पौलुस की बातों को समझने के लिए, हमें गलातिया की ऐतिहासिक परिस्थिति के बारे में कुछ मूलभूत सवालों का उत्तर देने की आवश्यकता है। हम दो प्रकार से इस विषय को देखेंगे। पहला, हम पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान गलातियों के साथ उसके सम्पर्क का पुनरावलोकन करेंगे। और दूसरा, हम कुछ विशिष्ट समस्याओं को देखेंगे जिन से पौलुस को उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली। आइए पहले हम पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा की पृष्ठभूमि को देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मिशनरी यात्रा

यह यात्रा ईस्वी सन् 46 के लगभग शुरू हुई जब परमेश्वर ने सीरियाई अन्ताकिया की कलीसिया को पौलुस और बरनबास को विशेष मिशनरी कार्य के लिए अलग करने को कहा। पौलुस और बरनबास जहाज से कुप्रुस को गए। पूर्वी नगर सलमीस से आरम्भ करके, पश्चिमी नगर पाफुस की ओर यात्रा करते हुए उन्होंने एक-एक आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया।

कुप्रुस से पौलुस और बरनबास जहाज से पिरगा गए, और फिर पिसदिया के अन्ताकिया में आए, जो उस समय रोमी क्षेत्र गलातिया का एक हिस्सा था। वहाँ आराधनालय में बहुत से यहूदियों ने पौलुस को सुसमाचार प्रचार करते हुए सुनने के बाद, सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया। परन्तु एक सप्ताह के भीतर ही, विश्वास न करने वाले यहूदियों ने नगरवासियों को पौलुस और बरनबास के विरूद्ध भड़काया और उन्हें नगर से बाहर खदेड़ दिया।

पिसदिया के अन्ताकिया से, पौलुस और बरनबास गलातिया में पूर्व की ओर आगे बढ़े, और पहले इकुनियुम नगर में रूके। जब उन्होंने वहाँ के आराधनालय में प्रचार किया, तो बहुत से यहूदी और अन्यजाति विश्वास में आए, परन्तु कलीसिया की दृढ़ता से स्थापना नहीं हुई थी, क्योंकि जब विश्वास न करने वाले यहूदियों ने पौलुस और बरनबास की हत्या करने का षडचन्त्र रचा तो वे जल्दी ही उस नगर से चले गए।

उनका अगला पड़ाव लुस्त्रा नगर में था, जहाँ पौलुस ने एक और कलीसिया की शुरूआत की। लुस्त्रा में, पौलुस ने एक व्यक्ति को चंगा किया जो जन्म से लंगड़ा था। परन्तु जब नगर के लोगों ने इस आश्चर्यकर्म को देखा, तो उन्होंने समझा कि पौलुस हिरमेस और बरनबास ज्यूस देवता है। उन्होंने मिशनरियों के लिए बलिदान चढ़ाने का प्रयास किया, परन्तु पौलुस और बरनबास ने उन्हें समझाया कि वे केवल मनुष्य हैं। बाद में, विश्वास ना करने वाले कुछ यहूदी इकुनियुम से आए, और उन्होंने लुस्त्रा के लोगों को पौलुस और बरनबास के विरूद्ध कर दिया, लेकिन परमेश्वर ने पौलुस के जीवन को बचाया और वह एक बार फिर आगे बढ़ गया। पौलुस और बरनबास गलातिया में पूर्व की ओर दिरबे तक आए, जहाँ बहुत से लोगों ने मसीह पर विश्वास किया। दिरबे में, अन्ततः पौलुस को पुरनियों की नियुक्ति करके कलीसिया को संगठित करने का समय मिला।

परन्तु पौलुस अब भी लुस्त्रा, इकुनियुम और पिसिदिया के अन्ताकिया के मसीहियों के लिए अत्यधिक चिन्तित था। अतः, अपनी देह और जीवन का खतरा उठाकर, पौलुस और बरनबास इन में से प्रत्येक नगर में वापस लौटे। उन्होंने अनुभवहीन कलीसियाओं को दृढ़ किया और समझाया कि विश्वासियों ने पौलुस और बरनबास को जिस प्रकार के कष्टों को सहते हुए देखा था, कुछ वैसे ही उपद्रवों की अपेक्षा सारे मसीहियों को रखनी चाहिए विशेषकर जब वे परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाते हैं। पिसदिया के अन्ताकिया से, मिशनरी पिरगा और अतालिया के नगरों में प्रचार करते हुए, किनारे की ओर लौटे। और अतालिया से, वे जहाज पर सीरिया के अन्ताकिया में गए।

अब, गलातियों की पुस्तक में, पौलुस ने गलातिया में अपने समय के बारे में बताया। अतः, हम जानते हैं कि उसने इस पत्री को अपनी पहली मिशनरी यात्रा के कुछ समय पश्चात् लिखा। परन्तु यह देखना महत्वपूर्ण है कि गलातियों की पत्री, प्रेरितों के काम 15 में लिखित यरूशलेम में हुई प्रेरितों की सुप्रसिद्ध सभा का वर्णन नहीं करती है, जो बाद में हुई। यरूशलेम में मण्डली ने उन्हीं मुद्दों को सम्बोधित किया जो गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री में हैं और यदि गलातियों की पत्री को लिखने से पहले ही यह सभा हो चुकी होती तो पौलुस अपने विचारों का समर्थन करने के लिए इस सभा की अपील कर सकता था। और ऐसा प्रतीत होता है कि उसने गलातियों की पत्री को ईस्वी सन् 48 में, गलातिया छोड़ने के लगभग एक वर्ष के अन्दर, लेकिन यरूशलेम की सभा होने से पूर्व लिखा।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि गलातियों की पुस्तक कैसे पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा से संबंधित है, तो हमें गलातिया की उन विशिष्ट समस्याओं को देखना चाहिए जिनके बारे में पौलुस चिन्तित था।

समस्याएँ

गलातिया की कलीसियाओं की अवस्थाएँ क्या थीं? उन कलीसियाओं में ऐसा क्या हुआ था जिसने पौलुस को उन्हें पत्र लिखने के लिए विवश किया? हम दो मुद्दों को देखेंगे: इन कलीसियाओं में अन्यजातियों की बाढ़, और झूठे शिक्षकों का उठना। आइए पहले हम देखते हैं कि गलातिया की कलीसियाओं में अन्यजाति मसीहियों की भीड़ कैसे आई।

अन्यजातियों का भारी मात्रा में विश्वास में आना

पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा के द्वारा परमेश्वर ने जो महान कार्य किए थे उन में से एक था बहुत से अन्यजातियों को मसीह में लाना। पौलुस के अत्यधिक आश्चर्य के लिए, गलातिया के अधिकाँश यहूदियों ने सुसमाचार का तिरस्कार कर दिया था। जब पौलुस ने इस विस्तृत विरोध का सामना किया, तो उसे अहसास हुआ कि परमेश्वर चाहता है कि वह अन्यजातियों तक पहुँचने पर ध्यान दे। पिसदिया के अन्ताकिया में यहूदियों से कहे गए पौलुस के वचनों पर ध्यान दें, जो प्रेरितों के काम अध्याय 13 पद 46 और 47 में लिखित हैं:

> "अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जब तुम उसे दूर हटाते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, "मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।'" *(प्रेरितों के काम 13:46-47)*

यह पद्यांश पौलुस की सेवकाई में एक बड़े बदलाव को प्रकट करता है। एक यहूदी के रूप में, उसने स्वाभाविक रूप से यहूदियों के बीच सुसमाचार प्रचार को प्राथमिकता दी। परन्तु सुसमाचार के प्रति उनके नकारात्मक प्रत्युत्तरों से पौलुस को निश्चय हो गया कि परमेश्वर उसे अन्यजातियों तक पहुँचने के लिए बुला रहा था। और इसे उसने अत्यधिक सफलतापूर्वक किया। देखें लूका प्रेरितों के काम अध्याय 14 पद 1 में किस प्रकार इकुनियुम में पौलुस के कार्य को संक्षेप में बताता है:

> इकुनियुम में पौलुस और बरनबास हमेशा की तरह यहूदी आराधनालय में गए। और इस प्रकार बातें की कि यहूदियों और यूनानियों में से बहुतों ने विश्वास किया। *(प्रेरितों के काम 14:1)*

केवल यहूदी ही नहीं, बल्कि अन्यजाति भी विश्वास में आए।

इसी प्रकार, प्रेरितों के काम अध्याय 14 पद 27 में लूका ने बताया कि पौलुस ने किस प्रकार यह कहते हुए अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा को समाप्त किया,

> परमेश्वर ने ... अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया। *(प्रेरितों के काम 14:27)*

अब, हम सोचेंगे कि गलातिया की कलीसियाओं में इतने अधिक अन्यजातियों को देखकर सब लोग बहुत आनन्दित हुए होंगे। परन्तु वास्तव में अन्यजातियों की बाढ़ ने गलातिया में गम्भीर समस्याओं को उत्पन्न किया। और समस्याओं ने झूठे यहूदी शिक्षकों को प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए उकसाया।

झूठे शिक्षक

पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा तक, मसीही कलीसिया मुख्यत: यहूदी थी। आरम्भिक कलीसिया यरूशलेम में आरम्भ हुई और उसने इस यहूदी पहचान को दृढ़ता से बनाए रखा था। इसके परिणामस्वरूप, अन्यजातियों की बाढ़ के कारण हर प्रकार की धर्मविज्ञानी और व्यवहारिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं। क्या इन अन्यजातियों को यहूदी परम्पराओं का पालन करना था? क्या पुराने नियम के विश्वासियों के समान उन्हें भी मूसा की व्यवस्था का पालन

करना था? इस प्रकार के प्रश्नों के कारण गलातिया में झूठे शिक्षक उठ खड़े हुए। इन यहूदी शिक्षकों ने कलीसिया में अन्यजातियों से निपटने के लिए अपने तरीकों का प्रयोग करते हुए बल दिया कि उनका खतना किया जाए।

अपनी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने अन्यजाति विश्वासियों का खतना नहीं किया था, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में झूठे शिक्षकों ने बिल्कुल विपरीत शिक्षा दी थी। अब पौलुस जानता था कि परमेश्वर ने खतना इस्राएल के लिए ठहराया था और वह खतने के विरूद्ध नहीं था। परन्तु गलातिया में अन्यजातियों के लिए खतना अत्यधिक गम्भीर विषय बन चुका था जिसे पौलुस अनदेखा नहीं कर सका। यह मसीही सुसमाचार के केन्द्र से गम्भीर दूरी को दिखाता था।

हम उन तीन रीतियों को स्पर्श करेंगे जिन में पौलुस का विश्वास था कि अन्यजाति मसीहियों के लिए खतने पर बल देना मसीही विश्वास की गम्भीर गलतफहमियों को प्रतिबिम्बित करता है। पहला, यह उद्धार के लिए मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान की पर्याप्तता का इन्कार करता था; दूसरा, यह शरीर की ताकत पर अनुचित निर्भरता को प्रदर्षित करता था; और तीसरा, इसके परिणामस्वरूप गलातिया की कलीसियाओं में मतभेद हो गया। आइए पहले हम देखते हैं कि झूठे शिक्षकों ने किस प्रकार उद्धार के लिए मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान की पर्याप्तता का इन्कार किया था।

गलातियों की पुस्तक से हम अनुमान लगा सकते हैं कि गलातिया के झूठे शिक्षक खतने को लहू के बलिदान के रूप में देखते थे जो विश्वासियों को इस प्रकार जीने में सक्षम बनाता था जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो। उनके विचार में, मसीहियों को मसीह के उद्धार के कार्य में खतने को जोड़ना था। परन्तु पौलुस के दृष्टिकोण में यह विश्वास मसीह की मृत्यु से उसके सच्चे अर्थ और मूल्य को छीन लेता था। इसी कारण पौलुस ने गलातियों अध्याय 5 पद 2 में इन वचनों को लिखा:

> देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूँ कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह का तुम्हारे लिए कोई मूल्य न रहेगा। *(गलातियों 5:2)*

मसीह के उद्धार के कार्य की पर्याप्तता का इन्कार करने के अतिरिक्त, गलातिया के झूठे शिक्षकों ने इस शिक्षा के द्वारा पौलुस के सुसमाचार को चुनौती दी कि विश्वासियों को अपने उद्धार को पूर्ण करने के लिए देह पर निर्भर रहना आवश्यक है। पौलुस ने गलातियों अध्याय 3 पद 3 में इस समस्या को अभिव्यक्त किया जहाँ वह इन व्यंग्यात्मक प्रश्नों को पूछता है:

> क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? *(गलातियों 3:3)*

शरीर के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *सार्क्स* है। पौलुस ने शरीर शब्द का प्रयोग केवल मानवीय ताकत को दिखाने, और अक्सर पापपूर्ण मानवीय रीतियों के अर्थ में किया।

जब पौलुस ने पहले गलातिया में सेवकाई की, तो उसके प्रचार के साथ आत्मा की सामर्थ के नाटकीय प्रदर्शन भी थे। गलातिया के विश्वासियों ने अपने मसीही जीवन का आरम्भ आत्मा की सामर्थ में किया था। परन्तु अब, खतने की ओर मुड़ने के द्वारा, उन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपनी स्वयं की मानवीय योग्यताओं पर निर्भर होना शुरू कर दिया था। मानवीय योग्यता पर निर्भरता के कारण वास्तव में वे बेबस और असफल हो गए थे।

पौलुस इस कारण भी अत्यधिक परेशान था कि मसीह के कार्य के मूल्य और पवित्र आत्मा के महत्व का इन्कार करने के अतिरिक्त, झूठे शिक्षकों ने कलीसिया में विभाजन पैदा कर दिया था। जैसा पौलुस ने गलातियों अध्याय 6 पद 15 और 16 में इसे बताया:

> क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति और दया होती रहे। *(गलातियों 6:15-16)*

मसीह में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच को विभाजन दूर कर दिया गया है।

गलातिया की कलीसियाओं में मतभेदों से पौलुस अत्यधिक परेशान था। परमेश्वर के लोगों के बीच झगड़ा और फूट मसीह के कार्य के बिल्कुल विपरीत था और उस आदर्श के विरूद्ध था जिसके लिए कलीसिया को प्रयास करना था। परन्तु झूठे शिक्षक पुराने नियम की शिक्षा पालन करते थे कि परमेश्वर के लोगों में पूरी तरह शामिल होने के लिए खतना आवश्यक था। कलीसिया में बहुत से लोगों के लिए, विशेषत: यहूदी मसीहियों के लिए, यह सोचना स्वाभाविक था कि जो खतने से इन्कार करता था वह दूसरे दर्जे का था। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि खतना करवाए हुए मसीहियों और खतनारहित मसीहियों के बीच विभाजन उत्पन्न हो गया।

अत: हम देखते हैं कि ये झूठे शिक्षक गलातिया की कलीसियाओं में कुछ अत्यधिक गम्भीर समस्याओं को ले आए थे। और यह सुनने के बाद कि झूठे शिक्षक क्या कर रहे थे, पौलुस शान्त नहीं रह सका। गलातिया के लोग उसकी आत्मिक सन्तान थे; वे उसके प्रियजन थे। इसलिए उसने यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों को इन झूठे शिक्षकों के विनाशकारी विचारों से बचाने के लिए अपनी पत्री को लिखा।

अब जबकि हम पौलुस की गलातियों की पत्री की पृष्ठभूमि के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को देख चुके हैं, तो हम उसकी पत्री की संरचना और विषय सूची को अधिक निकटता से देखने के लिए तैयार हैं। पौलुस ने गलातिया की कलीसियाओं को क्या लिखा? उसने उनकी समस्याओं का प्रत्युत्तर कैसे दिया? हम गलातियों की पुस्तक के प्रत्येक मुख्य भाग का साराँश बताते हुए संक्षेप में इसे देखेंगे।

विषय सूची

गलातियों की पत्री छह मुख्य भागों में विभाजित है: पहला, अध्याय 1 पद 1 से 5 में एक अध्यादेश; दूसरा, अध्याय 1 पद 6 से 10 में गलातिया की समस्या का परिचय; तीसरा, अध्याय 1 पद 11 से अध्याय 2 पद 21 तक कई ऐतिहासिक अभिलेख; चौथा, अध्याय 3 पद 1 से अध्याय 4 पद 31 तक विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त के लिए प्रमाणों की श्रृंखला; पाँचवाँ, अध्याय 5 पद 1 से अध्याय 6 पद 10 में कुछ व्यवहारिक उपदेश; और अन्त में, अध्याय 6 पद 11 से 18 में एक अतिरिक्त सन्देश।

अध्यादेश/अतिरिक्त सन्देश

गलातियों का अध्यादेश संक्षिप्त और स्पष्ट है। यह पौलुस का लेखक के रूप में परिचय देता है, और गलातिया की कलीसियाओं की पहचान इसे प्राप्त करने वालों के रूप में करता है। अतिरिक्त सन्देश भी संक्षिप्त है, जो अन्तिम टिप्पणियों और कलीसियाओं के लिए पौलुस की व्यक्तिगत आशीषों के साथ पत्री को समाप्त करता है। यह इस पत्री में पौलुस के कुछ अधिक महत्वपूर्ण विचारों पर भी प्रकाश डालता है।

समस्या का परिचय

दूसरे भाग, अध्याय 1 पद 6 से 10 में, जिसे हमने - समस्या का परिचय कहा है, पौलुस ने तुरन्त गलातिया में झूठी शिक्षा की समस्या पर हमला किया। उसने आश्चर्य व्यक्त किया, और अपने पाठकों को चुनौती दी कि झूठे शिक्षकों के पीछे चलना कितना खतरनाक था। स्पष्ट शब्दों में, पौलुस ने बल दिया कि उसकी शिक्षा का इन्कार करने का अर्थ था झूठे सुसमाचार को स्वीकार करना। देखें अध्याय 1 पद 8 में उसने झूठे शिक्षकों को कैसा कठोर स्राप दिया:

> परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। *(गलातियों 1:8)*

झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं को मानने का अर्थ था मसीह के सच्चे सुसमाचार का इन्कार करना - यह उद्धार का इन्कार करना था। पत्री का यह भाग स्पष्ट करता है कि गलातिया की समस्याएँ मामूली नहीं थीं। गलातिया के विश्वासियों के अनन्त लक्ष्य खतरे में थे।

ऐतिहासिक अभिलेख

पत्री का तीसरा भाग, अध्याय 1 पद 11 से अध्याय 2 पद 21, अधिक विस्तृत है। इसमें कई ऐतिहासिक अभिलेख शामिल हैं जिनमें पौलुस अपने अधिकार को साबित करता है। इन अध्यायों में तीन विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक घटनाएँ प्रमुख हैं: अध्याय 1 पद 11 से 17 में पौलुस की बुलाहट और प्रशिक्षण; अध्याय 2 पद 1 से 10 में पौलुस की यरूशलेम में कलीसिया के अगुवों से मुलाकात; और अध्याय 2 पद 11 से 21 में सीरिया के अन्ताकिया में पौलुस द्वारा पतरस का विरोध।

बुलाहट और प्रशिक्षण

पौलुस की बुलाहट और प्रशिक्षण का अभिलेख बताता है कि पौलुस को अन्यजातियों के खतना का विरोध करने का अधिकार कैसे मिला। इसका आरम्भ इस वर्णन के साथ होता है कि कैसे पौलुस इस्राएल की परम्पराओं से प्रेम करता था। गलातियों अध्याय 1 पद 13 और 14 में उसके वचनों को देखें:

> यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था उसके विषय में तुम सुन चुके हो... अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिए बहुत ही उत्साही था। *(गलातियों 1:13-14)*

परन्तु पौलुस ने यह भी समझाया कि उसकी मानसिकता कैसे बदली थी। यहूदी परम्पराओं के लिए अपने पहले के उत्साह के बावजूद, जब वह गलातिया से होकर जा रहा था, पौलुस ने अन्यजातियों से खतना करवाने की माँग नहीं की थी। यदि वह इस्राएल की परम्पराओं के प्रति इतना समर्पित था तो उसने ऐसा कैसे किया होगा? गलातियों अध्याय 1 पद 15 से 18 में पौलुस की गवाही को सुनें:

> परन्तु परमेश्वर की... जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ, तो मैं ने माँस और लहू से सलाह न ली... तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहाँ से दमिश्क को लौट आया। फिर तीन वर्ष के बाद मैं यरूशलेम गया। *(गलातियों 1:15-18)*

पौलुस ने अरब में तीन वर्षों तक सीधे यीशु से सुसमाचार और मसीही सिद्धान्तों को सीखा। अन्यजातियों के लिए खतने की आवश्यकता से इन्कार करना उसकी स्वाभाविक समझ या व्यक्तिगत प्राथमिकता का परिणाम नहीं था। यीशु, स्वयं प्रभु ने, पौलुस को उसके नये विचारों को सिखाया था। इस विषय पर पौलुस से असहमत होने का अर्थ था स्वयं मसीह से असहमत होना।

अगुवों से मुलाकात

गलातियों के इस भाग में, अध्याय 2 पद 1 से 10 में वर्णित दूसरा ऐतिहासिक अभिलेख, यरूशलेम में कलीसिया के अगुवों से पौलुस की मुलाकात के बारे में बताता है। आसान शब्दों में, पतरस के साथ पहले एक निजी मुलाकात के चौदह वर्ष बाद, पौलुस यरूशलेम में कलीसिया के अगुवों से मिला। और इस मुलाकात में उन्होंने अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने की उसकी विधि की पुष्टि की। गलातियों अध्याय 2 पद 1 से 9 में पौलुस के अभिलेख को देखें:

> ...मैं... फिर यरूशलेम को गया... मेरा जाना ईश्वरीय प्रकाशन के अनुसार हुआ; और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूँ, उसको मैं ने उन्हें बता दिया... जब उन्होंने

> देखा कि खतनारहितों के लिए मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया है... तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने... मुझ को और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएँ। *(गलातियों 2:1-9)*

पौलुस ने गलातियों को यह कहानी बताई कि वे देख सकें कि अन्यजातियों के बीच में उसका कार्य यरूशलेम में कलीसिया के अगुवों की अधिकृत शिक्षा के विरूद्ध नहीं था। वास्तव में, दूसरे प्रेरित इस बात पर सहमत थे कि परमेश्वर ने पौलुस को अन्यजातियों के संसार में सुसमाचार को फैलाने की विशेष भूमिका दी थी। अत:, पौलुस के पास अन्यजातियों के खतने के प्रश्न से निपटने का पूर्ण अधिकार था।

पतरस से मतभेद

पौलुस का तीसरा ऐतिहासिक अभिलेख, जो अध्याय 2 पद 11 से 21 में लिखित है, सीरिया के अन्ताकिया में पतरस के साथ मतभेद का वर्णन करता है। पहले, पतरस खतनारहित विश्वासियों के साथ पूरी तरह मिलता-जुलता था। लेकिन, कुछ समय बाद, यरूशलेम से आए कुछ सख्त यहूदी विश्वासियों के बीच पतरस को अपनी प्रतिष्ठा की चिन्ता होने लगी। इसलिए उसने स्वयं को खतनारहित विश्वासियों से दूर कर लिया।

पतरस अपने मन में चाहे जो भी विश्वास करता हो, लेकिन उसके कार्य इस झूठे विश्वास के अनुरूप थे कि खतनारहित अन्यजाति विश्वासी यहूदी विश्वासियों से हीन हैं। जब पौलुस को इसका पता चला, उसने पतरस का सामना किया और उसे सुसमाचार का स्मरण कराया जिस पर वे दोनों विश्वास करते थे। गलातियों अध्याय 2 पद 15 और 16 उस अवसर पर पतरस से कहे गए पौलुस के वचनों के बारे में बताते हैं:

> हम तो जन्म से यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। *(गलातियों 2:15-16)*

पौलुस ने पतरस के साथ अपने मतभेद को यह साबित करने के लिए लिखा कि इस विषय में पतरस ने भी उसके अधिकृत सुधार को माना था। यदि पौलुस का अधिकार उत्कृष्ट प्रेरित पतरस को भी सुधारने के लिए पर्याप्त था, तो यह गलातिया के झूठे शिक्षकों को सुधारने के लिए निश्चित रूप से पर्याप्त था।

बुलाहट और प्रशिक्षण, यरूशलेम में अधिकारियों से मुलाकात, और पतरस का सामना करने के इन तीन अभिलेखों में, पौलुस ने गलातिया में झूठे शिक्षकों के विरूद्ध एक मजबूत मामला बनाया और अपने सुसमाचार का बचाव किया।

धर्मविज्ञानी प्रमाण

इन ऐतिहासिक अभिलेखों को देने के पश्चात्, अध्याय 3 पद 1 से अध्याय 4 पद 31 में पौलुस अपनी पत्री के चौथे भाग की ओर मुड़ता है। वहाँ वह विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अपने सिद्धान्त के लिए अधिक प्रत्यक्ष धर्मविज्ञानी तर्क प्रस्तुत करता है। यह सामग्री चार भागों में विभाजित है, जो गलातियों के अनुभवों और अब्राहम के जीवन के बारे में धर्मशास्त्रीय अभिलेख पर आधारित है। पहला, पौलुस गलातियों के आरम्भिक अनुभव की याद दिलाता है। दूसरा, वह उद्धार के लिए अब्राहम के विश्वास के पुराने नियम के अभिलेख की ओर मुड़ता है। तीसरा, पौलुस गलातिया के विश्वासियों के वर्तमान अनुभव की याद दिलाता है। और चौथा, वह अब्राहम की पत्नियों और पुत्रों की कहानी के आधार पर चित्रण करता है।

आरम्भिक अनुभव

आइए हम संक्षेप में अध्याय 3 पद 1 से 5 को देखते हैं, जहाँ पौलुस गलातियों के मसीही विश्वास के आरम्भिक अनुभव पर ध्यान केन्द्रित करता है। उसने अध्याय 3 पद 2 से 5 में ये वचन लिखे:

> मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम... आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? ... जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है? *(गलातियों 3:2-5)*

प्रश्नों की एक श्रृंखला में, पौलुस अपनी पहली मिशनरी यात्रा के बारे में बताता है। जैसे प्रेरितों के काम 13 और 14 अध्याय हमें बताते हैं, गलातियों ने पवित्र आत्मा से बहुत सी अतुल्य आशीषों को उस समय प्राप्त किया था जब पौलुस पहली बार उनके साथ था। वे और पौलुस दोनों ही यह जानते थे कि उन्हें पवित्र आत्मा की ये आशीषें परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के कारण नहीं मिली थी। परमेश्वर ने मुफ्त में ये उपहार केवल इसलिए दिए थे कि उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया था। इस अनुभव से, यह विचार करने के बजाये कि परमेश्वर की आशीषों को बाद में व्यवस्था को मानने से प्राप्त किया जा सकता है, गलतियों की कलीसिया को बेहतर समझ रखनी चाहिए थी।

अब्राहम का विश्वास

उनके आरम्भिक मसीही अनुभव को स्पर्श करने के बाद, पौलुस अब्राहम के विश्वास के उदाहरण की ओर बढ़ता है। अध्याय 3 पद 6 से अध्याय 4 पद 11 में उसने तर्क दिया कि परमेश्वर ने अब्राहम को विश्वास के कारण आशीष दी थी, परमेश्वर की व्यवस्था को मानने के कारण नहीं। अब्राहम ने उद्धार की आशीष को शरीर के मानवीय प्रयासों से अर्जित नहीं किया था। इस भाग में पौलुस का तर्क कुछ जटिल है, परन्तु हम इसे साराँश में चार चरणों में बता सकते हैं।

पहला, पौलुस ने संकेत दिया कि अब्राहम को परमेश्वर के इस वायदे पर विश्वास के कारण धर्मी ठहराया गया था कि उसके एक पुत्र उत्पन्न होगा। अध्याय 3 पद 6 और 7 में पौलुस ने उत्पत्ति अध्याय 15 पद 6 का इस प्रकार हवाला दिया:

> "अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई।" अत: यह जान लो कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं।" *(गलातियों 3:6-7)*

पौलुस के दृष्टिकोण से, उत्पत्ति अध्याय 15 पद 6 ने यह स्पष्ट किया कि अब्राहम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के कारण धर्मी ठहराया गया था, न कि खतने के आधार पर जो दो वर्ष बाद हुआ। इस आधार पर, पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि अब्राहम की सच्ची सन्तानें वे लोग हैं जो उद्धार के लिए परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करने के अब्राहम के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। उद्धार वह आशीष थी जो विश्वास के द्वारा आई और खतने के द्वारा नहीं।

दूसरा, खतनारहित अन्यजातियों की स्थिति पर विवाद उत्पन्न होने के कारण, पौलुस आगे संकेत देता है कि परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था कि उद्धार की आशीष उसके द्वारा अन्यजातियों तक फैल जाएगी। गलातियों अध्याय 3 पद 8 और 9 में पौलुस उत्पत्ति अध्याय 12 पद 3 को इस प्रकार उद्धृत करता है:

> और पवित्रशास्त्र ने पहले ही से यह जानकर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया कि "तुझ में सब जातियाँ

> आशीष पाएँगी।" इसलिए जो विश्वास करनेवाले हैं, वे विश्वासी अब्राहम के साथ आशीष पाते हैं। *(गलातियों 3:8-9)*

पौलुस ने उत्पत्ति अध्याय 12 पद 3 की शिक्षा को समझ लिया कि एक समय यह प्रतिज्ञा की गई थी जब संसार भर के अन्यजातियों को परमेश्वर की आशीष प्राप्त होगी। यह आशीष सारी जातियों को उसी प्रकार मिलेगी जैसे यह अब्राहम को प्राप्त हुई थी, विश्वास के द्वारा।

तीसरा, पौलुस चाहता था कि गलातिया के लोग इस बात को समझें कि खतने में शरीर को काटना स्वयं को स्राप देने का एक प्रतीक था, धार्मिकता को प्राप्त करने का तरीका नहीं। खतने का मतलब था- यदि मैं वाचा के प्रति विश्वासयोग्य न रहूँ तो मैं अपने देश से नाश कर दिया जाऊँ। मसीह केवल इसी कारण आया था क्योंकि और कोई इस मापदण्ड के अनुरूप नहीं जी सकता था। जैसा पौलुस ने गलातियों अध्याय 3 पद 13 में बताया:

> मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया। *(गलातियों 3:13)*

यहूदी समझ के अनुसार सबसे अधिक लज्जाजनक और शापित मृत्यु- क्रूस पर चढ़ने के द्वारा- मसीह ने पाप के भयानक शाप को अपने ऊपर ले लिया। गलातियों को समझने की आवश्यकता थी कि वाचा की विश्वासयोग्यता की आशीषें उनकी थीं, पूर्णत: विश्वास के द्वारा, क्योंकि मसीह ने उनकी खातिर शाप को पहले ही अपने ऊपर ले लिया था।

चौथा, पौलुस ने यह तर्क देने के द्वारा झूठे शिक्षकों की आपत्ति को अर्जित कर लिया था कि मूसा की व्यवस्था ने अब्राहम के उदाहरण को पलटा नहीं था। जैसा उसने गलातियों अध्याय 3 पद 17 से 19 में बताया:

> जो वाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्ष के बाद आकर नहीं टाल सकती कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे... तब फिर व्यवस्था क्यों दी गई? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी। *(गलातियों 3:17-19)*

पौलुस के दृष्टिकोण से, व्यवस्था लोगों को कार्यों के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को पाने में सक्षम बनाने के लिए नहीं दी गई थी, जैसा कि गलातिया के झूठे शिक्षकों ने दावा किया था। मूसा की व्यवस्था इस्राएल के पाप से निपटने, और उन्हें मसीह के लिए तैयार करने के लिए दी गई थी।

पाँचवें स्थान में, पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर की आशीषें केवल उन लोगों को प्राप्त हुई जो अब्राहम के विशेष पुत्र, मसीह से संबंधित हैं। जैसे पौलुस ने गलातियों अध्याय 3 पद 16 और 29 में लिखा:

> अत: प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, "वंशों को," जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है... और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो। *(गलातियों 3:16, 29)*

जब पौलुस ने उत्पत्ति के अभिलेख को पढ़ा, उसने अध्याय 22 पद 18 में देखा कि इब्रानी शब्द *ज़ेरा* (अनुवाद-वंश) एकवचन था, बहुवचन नहीं। अब्राहम की विरासत अब्राहम की सारी सन्तानों को व्यक्तिगत रूप में नहीं दी गई थी, परन्तु सबसे पहले अब्राहम के पुत्र को जो उन सबका मुख्य प्रतिनिधि था जो अब्राहम से उत्पन्न होने वाले थे। और मसीह के प्रकाशन के प्रकाश में, पौलुस जानता था कि मसीह अब्राहम का महान वंशज था जो हर समय के परमेश्वर के लोगों का अन्तिम मुख्य प्रतिनिधि था। मसीह वह एक महान वंशज है जो अब्राहम को दी गई सारी प्रतिज्ञाओं का वारिस है और केवल उस से संबंधित लोग ही इस वारिस के भागीदार बनते हैं।

इस प्रकार, पौलुस ने तर्क दिया कि केवल वे ही लोग धर्मी ठहराए जाते हैं जो अब्राहम के उदाहरण का अनुसरण करते हैं और अब्राहम के पुत्र के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते हैं; उद्धार परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास के द्वारा है, व्यवस्था के कार्यों के द्वारा नहीं।

वर्तमान अनुभव

गलातियों के उद्धार के आरम्भिक अनुभव और अब्राहम के विश्वास के बाइबल के अभिलेख के बारे में बताने के पश्चात्, गलातियों अध्याय 4 पद 12 से 20 में पौलुस गलातियों के वर्तमान अनुभव को संबोधित करता है। देखें अध्याय 4 पद 15 और 16 में वह क्या लिखता है:

> तुम्हारा वह आनन्द मनाना कहाँ गया?... तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूँ? *(गलातियों 4:15-16)*

यहाँ पौलुस गलातियों की आत्मिक खुशहाली के लिए गहरी चिन्ता व्यक्त करता है; वह चाहते था कि वे अपनी निराशाजनक आत्मिक अवस्था को पहचानें। जब गलातिया के लोग सुसमाचार से फिरे, उनका आनन्द छिन गया, पवित्र आत्मा का फल जो उनमें होना चाहिए था। केवल इसी हानि के कारण गलातियों को इस तथ्य के प्रति सतर्क हो जाना चाहिए था कि पौलुस के विरोधियों की शिक्षा में कुछ गलत था।

अब्राहम की पत्नियाँ और पुत्र

चौथा पौलुस ने गलातियों अध्याय 4 पद 21 से 31 में अब्राहम की पत्नियों और पुत्रों के बाइबल के अभिलेख पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा झूठे शिक्षकों के विरूद्ध अपने मामले का तर्क दिया। पौलुस ने समझाया कि उत्पत्ति अध्याय 15 में परमेश्वर ने अब्राहम से उसकी पत्नी सारा के द्वारा एक वारिस की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु सारा बाँझ थी और गर्भधारण की आयु को पार कर चुकी थी, इसलिए उसके द्वारा वारिस को प्राप्त करने के लिए अब्राहम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करने की आवश्यकता थी। अपने वचन को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के द्वारा, सारा ने एक पुत्र, इसहाक को जन्म दिया। सारा का पुत्र इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र था, और उसे अब्राहम के वारिस और विश्वास करने वाले सारे लोगों के लिए प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया गया।

परन्तु, जैसे उत्पत्ति अध्याय 16 हमें बताता है, इसहाक के जन्म से पूर्व, परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा के पुत्र को देने की प्रतीक्षा में अब्राहम थक गया था। इसलिए, एक पुत्र को पाने के लिए वह सारा की दासी हाजिरा की ओर मुड़ा। ऐसा करने के द्वारा, अब्राहम ने मानवीय प्रयास द्वारा, शरीर के प्रयास द्वारा अपने वंश को सुरक्षित रखने की कोशिश की। अब्राहम से हाजिरा ने इश्माएल को जन्म दिया, परन्तु इश्माएल शारीरिक बच्चा था। परमेश्वर ने अब्राहम के वारिस के रूप में उसे अस्वीकार कर दिया, और वह उन सबका प्रतिनिधि बन गया जो उद्धार के लिए शरीर की ओर देखते हैं। अब्राहम की पत्नियों और पुत्रों के बीच इस विरोधाभास का चित्रण करने के पश्चात्, पौलुस गलातियों अध्याय 4 पद 31 में इस प्रकार से निष्कर्ष देता है:

> इसलिए हे भाइयो, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं। *(गलातियों 4:31)*

परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास मसीहियों के लिए उद्धार का मार्ग है, ठीक उसी प्रकार जैसे अब्राहम के विश्वास के कारण सारा के इसहाक उत्पन्न हुआ। अब्राहम के समय के समान ही, हर युग के विश्वासी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराए जाते हैं, शामिल किए जाते हैं, और धर्मी जीवन बिताने के लिए सामर्थी बनाए जाते हैं, अपनी स्वयं की योग्यता के द्वारा नहीं।

अत: हम देख चुके हैं कि पौलुस ने यह समझाने के लिए चार मुख्य तर्क दिए कि विश्वासी परमेश्वर की सारी आशीषों को केवल विश्वास के माध्यम से प्राप्त करते हैं। उसने गलातियों के उद्धार के आरम्भिक अनुभव से, अब्राहम के विश्वास से, हाल ही में गलातियों की खुशी छिन जाने, और अब्राहम की पत्नियों और पुत्रों के अभिलेख से तर्क दिया।

व्यवहारिक उपदेश

1 से 4 अध्यायों की विषय सूची को ध्यान में रखते हुए, हम इस स्थिति में हैं कि अध्याय 5 पद 1 से अध्याय 6 पद 10 तक के उपदेशों को संक्षेप में बता सकें। इन अध्यायों में, पौलुस कई व्यवहारिक समस्याओं को संबोधित करता है जो झूठे शिक्षकों के कारण गलातिया में उत्पन्न हुई थीं।

इन वचनों में पौलुस के पास कहने को बहुत कुछ था परन्तु हम यहाँ पौलुस के विचारों को तीन मुख्य शीर्षकों के अन्तर्गत साराँश में बता सकते हैं: मसीह में उत्तरदायी स्वतंत्रता, अध्याय 5 पद 1 से 15 में; पवित्र आत्मा की सामर्थ, अध्याय 5 पद 16 से 26 में; और परमेश्वर का न्याय, अध्याय 6 पद 1 से 10 में। आइए पहले हम मसीह में उत्तरदायी स्वतंत्रता पर पौलुस के दिए गए बल को देखते हैं।

मसीह में स्वतंत्रता

अध्याय 5 पद 1 से 15 में पौलुस ने गलातियों से कहा कि वे मसीह में अपनी स्वतंत्रता के प्रति सच्चे बने रहें। उसकी स्थिति सावधानीपूर्वक सन्तुलित है। सबसे पहले, उसने मसीही स्वतंत्रता को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। अध्याय 5 पद 1 में उसके वचनों को देखें:

> मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो। *(गलातियों 5:1)*

अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान, पौलुस अन्यजातियों को बोझ से मुक्त मसीही विश्वास में लाया था, और वह चाहता था कि वें स्वतंत्र रहें क्योंकि व्यवस्थावाद के जूए अत्यधिक खतरनाक हैं। जैसा उसने गलातियों अध्याय 5 पद 2-3 में लिखा:

> यदि तुम खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूँ कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। *(गलातियों 5:2-3)*

गलातिया के झूठे शिक्षकों ने धार्मिकता की व्यवस्थावादी प्रणाली आरम्भ की थी। उन्होंने मसीहियों को सिखाया था कि वे मसीह की बजाय व्यवस्था के पालन पर निर्भर रहें। परन्तु ऐसा करने में, उन्होंने वास्तव में उन अन्यजाति मसीहियों पर एक ऐसे प्रमाप की जिम्मेदारी डाल दी जिसे पूरा करना असंभव था, अर्थात पूरी व्यवस्था को मानना। उनके विकल्प मसीह में स्वतंत्रता और व्यवस्था के बंधन के बीच में थे। एक उद्धार की ओर ले जाता था, दूसरा न्याय की ओर।

इसी प्रकार, दूसरे स्थान में, पौलुस ने मसीही नैतिक उत्तरदायित्व की पुष्टि के साथ मसीही स्वतंत्रता के अपने बचाव को सन्तुलित किया। उसने गलातियों को चेतावनी दी कि वे यहूदी परम्पराओं से अपनी मसीही आजादी का परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का अनादर करने के लिए लाइसेन्स के रूप में प्रयोग न करें। अध्याय 5 पद 13 में उसने लिखा:

> हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने। *(गलातियों 5:13)*

मसीह ने गलातिया के मसीहियों को धर्मी ठहराए जाने और धार्मिक जीवन की सामर्थ के माध्यम के रूप में व्यवस्था के बंधन से मुक्त किया था, परन्तु अब भी उसकी माँग थी कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें। पौलुस नहीं चाहता था कि गलातिया के लोग यह सोचें कि उनको खतने से प्राप्त स्वतंत्रता में परमेश्वर के पवित्र स्वभाव का उल्लंघन करने की स्वतंत्रता शामिल है, जो व्यवस्था का मूल आधार थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आत्मा की सामर्थ

मसीह में स्वतंत्रता और धर्मी जीवन के प्रति इस दो-स्तरीय बल को स्थापित करने के पश्चात्, गलातियों अध्याय 5 पद 16 से 26 में पौलुस पवित्र आत्मा की सामर्थ के महत्व को संबोधित करता है। यदि व्यवस्थावाद और मानवीय प्रयास के द्वारा नहीं तो गलातियों को पाप का सामना करने की सामर्थ कैसे प्राप्त हो सकती है?

एक शब्द में, पौलुस ने उत्तर दिया कि प्रत्येक विश्वासी को अगुवाई और सामर्थ के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करना चाहिए न कि शरीर पर। देखें अध्याय 5 पद 16 और 25 में वह इसे किस प्रकार बताता है:

> पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे... यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। *(गलातियों 5:16-25)*

पौलुस के दृष्टिकोण में, मसीह में पवित्र जीवन जीने का एकमात्र मार्ग परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर रहना और उसका पालन करना है।

अब, सर्वदा यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने पवित्र आत्मा को कभी पवित्रशास्त्र के ऊपर या विरूद्ध नहीं रखा। पौलुस के लिए, आत्मा में जीने को लिखित प्रकाशन से अलग नहीं किया जा सकता था। परमेश्वर का आत्मा सदैव परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के लिखित प्रकाशन के अनुसार जीने की अगुवाई देता था, जैसा यह पुराने नियम में पहले से ही प्रकट था और जैसे यह पौलुस की पत्रियों और दूसरी रचनाओं में प्रगतिशील रूप में प्रकट हो रहा था जो नया नियम बनने वाली थीं। परन्तु आत्मा के अनुसार जीना केवल लिखित वचनों की शिक्षा के अनुरूप जीना नहीं था। इसमें उस कार्य को पूरा करने के लिए आत्मा की सामर्थ पर सचेत निर्भरता भी शामिल थी जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। मसीहियों को परमेश्वर से कोई भय नहीं है यदि वे अपने जीवनों में धार्मिकता के फल को उत्पन्न करने के लिए आत्मा पर निर्भर रहते हैं।

दिव्य न्याय

तीसरा, पौलुस परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करने के द्वारा इन व्यवहारिक विषयों को संक्षेप में बताता है। अध्याय 6 पद 7 से 9 में उसकी गम्भीर चेतावनी को सुनें:

> धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। *(गलातियों 6:7-9)*

गलातियों की अन्तिम नियति के बारे में पौलुस को गहरी चिन्ता थी। वह जानता था कि मसीह में सच्चे विश्वासियों से उनका उद्धार कभी छिन नहीं सकता। परन्तु वह यह भी जानता था कि विश्वास का अंगीकार करने वाले हर व्यक्ति में उद्धार देने वाला विश्वास नहीं है। अत:, उसने गलातिया की कलीसियाओं को चेतावनी दी कि वे परमेश्वर के आने वाले न्याय को न भूलें। उसकी आशा थी कि यह चेतावनी उन्हें उद्धार के लिए मसीह और पवित्र आत्मा पर भरोसा करने के लिए उत्साहित करेगी।

गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री के इस संक्षिप्त अवलोकन से, हम देख सकते हैं कि पौलुस ने गलातिया के झूठे शिक्षकों का कई प्रकार से खण्डन किया। उसने गलातियों से गहन निजी अपीलें की, और उनसे कहा कि वे सच्चे सुसमाचार पर विश्वास करें और उस सुसमाचार के अनुसार जीएँ जिसका वर्षों पूर्व उसने उनके बीच में प्रचार किया था। संक्षेप में, पौलुस ने गलातियों को उपदेश दिया कि वे झूठे शिक्षकों को त्याग दें और पुन: कार्यों के अलावा विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सुसमाचार का आलिंगन करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब तक, हमने गलातिया की कलीसियाओं को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि और उसकी पत्री की मूलभूत विषय सूची का अनुसंधान किया। अब हम अपने तीसरे बिन्दू को देखने की स्थिति में हैं: गलातियों की पुस्तक किस प्रकार पौलुस के केन्द्रिय धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को प्रतिबिम्बित करती है।

धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण

इस श्रृंखला के हमारे पहले अध्याय से आपको याद होगा कि हमें पौलुस की पत्रियों में विशिष्ट शिक्षाओं और उसकी मूल धर्मविज्ञानी प्रणाली के बीच पहचान करनी है। अन्यजाति मसीहियों से खतने को मानने के लिए कहने के कारण पौलुस ने गलातिया के झूठे शिक्षकों को बार-बार सुधारा। और उसने खतने और विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषयों पर चर्चा में काफी समय व्यतीत किया।

खतने और उद्धार के बारे में पौलुस के प्रत्यक्ष कथन वास्तव में उसके मूल धर्मविज्ञानी विश्वासों की अभिव्यक्ति थे। गलातियों की पुस्तक में उसकी शिक्षा उसके केन्द्रिय युगान्त विज्ञान संबंधी विचारों का प्रयोग थी। आपको याद होगा कि कैसे पौलुस ने सिखाया कि आने वाला महान युग मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के साथ आरम्भ हो चुका था, यद्यपि पाप और मृत्यु पूर्णत: तब तक नष्ट नहीं होंगे जब तक मसीह अपनी महिमा में नहीं आता है। और इसका अर्थ है कि मसीही ऐसे समय में रहते हैं जिसे हम - पहले से और अभी नहीं - कह सकते हैं, ऐसा समय जब पाप और मृत्यु का युग और अनन्त उद्धार का युग दोनों साथ-साथ चलते हैं।

परन्तु इस युग और आने वाले युग के एक साथ चलने के तथ्य ने गलातिया में कुछ महत्वपूर्ण गलतफहमियों को जन्म दिया। पौलुस का मानना था कि खतना, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना और उसके समान अन्य विषयों पर गलातिया के विशिष्ट विवाद वास्तव में अधिक मूलभूत समस्या के लक्षण थे। गलातिया की मूलभूत गलती यह थी कि झूठे शिक्षकों ने इस बात को बहुत कम करके आँका था कि मसीह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा किस स्तर तक आने वाले युग को लाया था। वे यह समझने में चूक गए कि आने वाले युग का कितना अधिक पहले से ही उपस्थित था। इसके परिणामस्वरूप, इस झूठी शिक्षा को हम - निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान कह सकते हैं, जिसका अर्थ है कि उनके विचारों ने मसीह के प्रथम आगमन के महत्व को कम कर दिया था।

अब एक अर्थ में, पौलुस ने गलातियों की पुस्तक के प्रत्येक भाग में झूठे शिक्षकों के निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान पर हमला किया। परन्तु हम छह क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिनमें पौलुस ने इस समस्या पर अपने केन्द्रिय धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को स्पष्टता से लागू किया: पहला, उसका मसीह का वर्णन; दूसरा, सुसमाचार पर ध्यान; तीसरा, मूसा की व्यवस्था; चौथा, मसीह के साथ एकता का सिद्धान्त; पाँचवाँ, मसीही जीवन में पवित्र आत्मा पर उसका बल; और छठा, नई सृष्टि के उसके सिद्धान्त की उसकी अन्तिम अपील।

मसीह

अन्त के दिनों के सिद्धान्त की पौलुस की अपील गलातियों की पुस्तक के परिचय में उसके मसीह के वर्णन में स्पष्ट हो जाती है। देखें पौलुस गलातियों अध्याय 1 पद 3 से 4 में किस प्रकार यीशु का वर्णन करता है:

> परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया, ताकि हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। *(गलातियों 1:3-4)*

ध्यान दें कि पौलुस ने गलातियों के लिए यूँ ही पिता और मसीह की आशीषों की कामना नहीं की थी। इसके विपरीत, उसने उस उद्देश्य की ओर ध्यान खींचा जिसके लिए पिता ने मसीह को भेजा था। जैसे उसने वहाँ लिखा, यीशु को भेजा गया - ताकि हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।

अभिव्यक्ति-"वर्तमान बुरा संसार" मानक यहूदी शब्दावली को बताता है जिससे हम पहले से ही परिचित हैं। वर्तमान बुरा संसार-इस युग, मसीह के आगमन से पूर्व पाप और न्याय के युग का पर्याय है। पौलुस ने इस प्रकार मसीह का वर्णन किया क्योंकि अपनी पत्री के आरम्भ में वह संकेत देना चाहता था कि गलातियों की नजर उस कारण पर से हट गई थी जिसके लिए मसीह पृथ्वी पर आया था, विशेषत: मसीहियों को आने वाले युग में प्रवेश कराना।

झूठे शिक्षकों के कारण गलातिया में बहुत से विश्वासियों की नजर उन महान परिवर्तनों से हट गई थी जो मसीह ने इस संसार में किए थे। यह विशेषत: इस तथ्य में स्पष्ट है कि झूठे शिक्षकों ने वाचा के पुराने चिन्ह खतने पर लौटने के लिए बल दिया था। मसीही विश्वास की शिक्षा थी कि यीशु इस पृथ्वी पर विश्वासियों को इस युग से और इसकी पुरानी रीतियों से छुड़ाने के लिए आया था। सिद्धान्त या व्यवहार में इस सत्य खण्डन करना मसीही विश्वास के मूल तत्व का खण्डन करना था।

सुसमाचार

दूसरी रीति जिसके द्वारा पौलुस ने गलातियों के निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान पर अपनी चिन्ता जताई वह थी सुसमाचार के विषय पर झूठे शिक्षकों से अपनी असहमति का वर्णन करना। देखें पौलुस गलातियों अध्याय 1 पद 6 और 7 में इस विषय को कैसे साराँश में बताता है:

> मुझे आश्चर्य होता है कि तुम... और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे-परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं। ***(गलातियों 1:6-7)***

अब, निश्चिन्त हो सकते हैं कि गलातिया में झूठे शिक्षकों ने यीशु के बारे में बात करना बन्द नहीं किया था। वे अब भी मसीही होने का दावा करते थे। अत:, पौलुस ने उनके सन्देश को दूसरा सुसमाचार या यह क्यों कहा कि वह सुसमाचार है ही नहीं?

इस कथन के महत्व को समझने के लिए, हमें याद रखना है कि "सुसमाचार' शब्द, या-शुभ समाचार, जैसा कई बार इसका अनुवाद किया जाता है, यूनानी शब्द *यूआंगेलियोन* से आता है। यह नया नियम यूनानी शब्द पुराने नियम के इब्रानी शब्द *मेबासर* पर आधारित था, विशेषत: यशायाह में जिस प्रकार इसका प्रयोग किया गया था। यशायाह अध्याय 52 पद 7 में यशायाह नबी के वचनों को देखें:

> पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है।" ***(यशायाह 52:7)***

इस पद्यांश में, यशायाह ने उस समय के बारे में बताया जब इस्राएल की पुराने नियम की बंधुआई समाप्त हो जाएगी। और उसने शुभ समाचार शब्द का प्रयोग किया, यह घोषणा करने के लिए कि बंधुआई समाप्त हो चुकी है, परमेश्वर ने मानवीय इतिहास में अपना राज्य स्थापित कर दिया है, और परमेश्वर ने अपने शत्रुओं का न्याय करना और अपने लोगों को आशीष देना आरम्भ कर दिया है। जैसा यशायाह ने यहाँ कहा, उद्धार का सुसमाचार है-तेरा परमेश्वर राज्य करता है, परमेश्वर का राज्य। बंधुआई के पश्चात् परमेश्वर के इस राज्य को नया नियम-परमेश्वर का राज्य कहता है, जो आने वाले युग का पर्याय है।

अत:, जब पौलुस ने कहा कि झूठे शिक्षकों के पास सुसमाचार था ही नहीं, तो उसका आशय था कि उन्होंने इस बात से इन्कार किया कि मसीह ही आने वाले युग को, उद्धार के युग को, परमेश्वर के राज्य के युग को लाया था। खतने की शिक्षा देने के द्वारा, जिसका आशय था व्यवस्था के कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराया जाना, झूठे शिक्षक

मसीह के प्रथम आगमन के सच्चे महत्व से इन्कार करते थे। उनके पास दूसरों को बताने के लिए कोई सुसमाचार या शुभ समाचार नहीं था क्योंकि वे विश्वास नहीं करते थे कि परमेश्वर का राज्य, या आने वाले युग को, लाने में मसीह ने किसी रीति से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ पुन:, पौलुस समझ गया था कि गलातिया की समस्या की जड़ झूठे शिक्षकों का निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान था। मसीही सुसमाचार यह घोषणा है कि मसीह वास्तव में परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाया है; उसने आने वाले युग का शुभारम्भ किया है।

व्यवस्था

गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री पर पौलुस के युगान्त विज्ञान का तीसरा प्रभाव मूसा की व्यवस्था के उसके निर्धारण में था। पौलुस ने इस पत्री में कई बार व्यवस्था के विषय को स्पर्श किया, परन्तु अध्याय 3 में वह इस युग और आने वाले युग के संबंध में इसके उद्देश्य से स्पष्टता से निपटता है।

अब, हम पहले ही देख चुके हैं कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करना कोई नया सिद्धान्त नहीं था जिसे पौलुस अन्यजातियों के सुसमाचार प्रचार में लाया था। विश्वास सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में सर्वदा से उद्धार का मार्ग था। परन्तु विश्वास पर पौलुस के बल ने एक गम्भीर प्रश्न को उत्पन्न किया: यदि परमेश्वर की आशीषें यहूदियों और अन्यजातियों को सदैव केवल विश्वास के माध्यम से मिलती रही हैं, तो मूसा की व्यवस्था का क्या उद्देश्य था? परमेश्वर ने इस्राएल को मूसा की व्यवस्था क्यों दी थी? पौलुस ने अध्याय 3 पद 19 में इन प्रश्नों का उत्तर दिया:

> तब फिर व्यवस्था क्यों दी गई? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी। *(गलातियों 3:19)*

ध्यान दें पौलुस ने इसे कैसे बताया। व्यवस्था अपराधों के कारण दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे।

पहली नजर में, ऐसा प्रतीत हो सकता है कि पौलुस ने मूसा की व्यवस्था को मसीह के आने से पूर्व के युग से जोड़ने के द्वारा मूसा की व्यवस्था की नैतिक प्रासंगिकता को दूर हटा दिया था। गलातियों के कई पद्यांश दिखाते हैं कि ऐसा नहीं था। गलातियों अध्याय 5 पद 14 में पौलुस ने लैव्यवस्था अध्याय 19 पद 18 की अपील यह समझाने के लिए की कि विश्वासियों को प्रेम क्यों करना चाहिए:

> सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" *(गलातियों 5:14)*

ऐसी ही व्यवस्था की एक अपील गलातियों अध्याय 5 पद 22 और 23 में आती है। जैसे उसने वहाँ लिखा:

> पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। *(गलातियों 5:22-23)*

परन्तु यदि पौलुस मसीहियों को मूसा की व्यवस्था को फेंकने की शिक्षा नहीं दे रहा था, तो फिर उसने गलातियों अध्याय 3 पद 19 में यह क्यों लिखा कि व्यवस्था अपराधों के कारण दी गई, और यह तब तक के लिए थी-जब तक कि वह वंश न आ जाए?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, यह याद करना सहायक है कि गलातिया में समस्या यह थी कि झूठे शिक्षकों ने सोचा कि व्यवस्था यथार्थ में कहीं बेहतर थी: उन्होंने सोचा कि व्यवस्था का पालन करना परमेश्वर से उद्धार को पाने का मार्ग था। परन्तु पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर ने सदैव अपने लोगों को विश्वास के माध्यम से आशीष दी थी। इसी कारण अध्याय 3 पद 19 में उसने कहा कि व्यवस्था बाद में अपराधों के कारण दी गई। व्यवस्था परमेश्वर के लोगों को उद्धार देने या उन्हें धार्मिक जीवन बिताने की सामर्थ देने के लिए नहीं दी गई थी; यह उनके पाप को प्रकट करने के लिए दी गई थी।

परन्तु व्यवस्था का परमेश्वर की योजना में यह महत्वपूर्ण कार्य था - जब तक वह वंश न आए, यानि मसीह के आने तक। मूसा की व्यवस्था पुरूषों और स्त्रियों को उनके पापों का दोषी ठहराने के लिए दी गई थी। परन्तु दोष लगाने का व्यवस्था का अधिकार केवल अल्पकालिक था। अब जबकि मसीह आ चुका है, उसने नये युग का शुभारम्भ कर दिया है, और विश्वासी मसीह में एक हैं, वे आने वाले युग में प्रवेश कर चुके हैं। और आने वाले युग में, व्यवस्था के दोषी ठहराने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया है। मसीह के सच्चे अनुयायी व्यवस्था के दोष से मुक्त हैं।

मसीह के साथ एकता

पौलुस के केन्द्रिय दृष्टिकोण का युगान्त विज्ञान पर निर्भर होने का चौथा तरीका मसीह के साथ विश्वासियों की एकता पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा था। गलातिया में झूठे शिक्षकों ने गलातियों को अपने उद्धार के बारे में व्यक्तिगत अर्थ में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया। खतने और मूसा की व्यवस्था की शर्तों पर उनके ध्यान ने उद्धार को धार्मिक जीवन जीने के व्यक्तिगत प्रयास में गिरा दिया था, और जिसका आशय था, व्यवस्था के पालन द्वारा धार्मिकता को अर्जित करना। वास्तव में, पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों को अपने व्यक्तिगत गुणों के आधार पर परमेश्वर के सामने खड़ा होने के लिए छोड़ दिया गया था।

परन्तु पौलुस ने बल दिया कि इस प्रकार न तो धार्मिकता को और न ही धार्मिक जीवन को प्राप्त किया जा सकता है। धार्मिकता और धार्मिक जीवन को मसीह के साथ एकता के द्वारा आना था। गलातियों अध्याय 3 पद 26 से 29 में पौलुस ने इसे इस प्रकार बताया:

> तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो। ***(गलातियों 3:26-29)***

गलातिया में झूठे शिक्षकों ने वास्तव में सिखाया कि कलीसिया में कुछ विश्वासी दूसरों से बेहतर थे क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के आधार पर परमेश्वर के सामने खड़ा होता या गिरता था। परन्तु वे गलत थे। सत्य है कि हम ने मसीह को पहन लिया है, हम मसीह यीशु में हैं। हम मसीह में इस प्रकार एक हैं, इसलिए परमेश्वर मसीहियों को इस प्रकार देखता है जैसे कि वे स्वयं मसीह हों। और मसीह पूर्णत: धर्मी और पवित्र, धर्मी ठहराया हुआ और अब्राहम की सारी आशीषों के योग्य है, इसलिए परमेश्वर हमें भी धर्मी और पवित्र और धर्मी ठहराए हुओं और आशीष को पाने के योग्य व्यक्तियों के रूप में देखता है।

एक बार फिर, पौलुस का दृष्टिकोण उसके युगान्त विज्ञान से आया। पौलुस ने सिखाया कि न्याय के इस युग से आशीष के आने वाले युग का परिवर्तन मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा होता है। व्यवस्था का पालन करने के द्वारा, मसीह ने सारे विश्वासियों के लिए व्यवस्था की माँगों को पूरा किया। विश्वासियों के स्थान पर उसकी मृत्यु -- उनकी खातिर व्यवस्था के शापों को सहने के द्वारा -- मसीह ने व्यवस्था की इस माँग को पूरा कर दिया था कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। विश्वासियों की खातिर अपने पुनरूत्थान के द्वारा, मसीह और वे जिनके लिए वह मरा था परमेश्वर द्वारा महिमा पाने के योग्य ठहराए गए। इसके परिणामस्वरूप, जब विश्वासी विश्वास के द्वारा मसीह के साथ एक हैं, तो परमेश्वर उन्हें इस प्रकार देखता है जैसे वे मसीह हों, और उस आधार पर वह मानता है कि वे व्यवस्था के स्राप के लिए मसीह के साथ मर गए हैं और आने वाले युग के नये जीवन में मसीह के साथ जी उठे हैं।

गलातिया के झूठे शिक्षकों के पीछे चलने का अर्थ था अब्राहम की प्रतिज्ञा के वारिस के रूप में मसीह की इस केन्द्रिय भूमिका का इन्कार करना-इसका अर्थ यह माँग करना था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के मानवीय प्रयास के द्वारा धार्मिक जीवन की आशीष को पाए। परन्तु पौलुस ने मसीह को अब्राहम के वंश के रूप में देखा

जिसके द्वारा उद्धार का प्रत्येक पहलू आता है, और स्पष्ट किया कि विश्वासियों को परमेश्वर की सारी आशीषें केवल तभी प्राप्त होती हैं जब वे मसीह के साथ एक होते हैं।

पवित्र आत्मा

गलातियों की पुस्तक को लिखने में पौलुस के युगान्त विज्ञान द्वारा मार्गदर्शन का पाँचवाँ तरीका उसके द्वारा मसीही जीवन में पवित्र आत्मा की भूमिका पर चर्चा करना था। वास्तव में, पवित्र आत्मा की भूमिका उन मुख्य विचारों में से एक था जो इस पत्री को लिखते समय पौलुस के मन में थे। इस बल को पौलुस के गलातिया में झूठी शिक्षा के पहले विवरण में देखा जा सकता है। देखें उसने गलातियों अध्याय 3 पद 1 से 3 में क्या लिखा:

> हे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया है?... क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? *(गलातियों 3:1-3)*

पौलुस चकित था कि जिन गलातियों ने पवित्र आत्मा पर भरोसा करने के द्वारा अपने मसीही जीवनों को आरम्भ किया था, वे किसी तरह अपने मानवीय प्रयासों पर भरोसा करने की चाल में फँस गए थे।

एक स्थान जहाँ पौलुस ने पवित्र आत्मा के कार्य और मानवीय प्रयास के शरीर के कार्य के बीच अन्तर की ओर ध्यान खींचा वह था गलातियों अध्याय 5 पद 16 से 26. वहाँ, उसने शरीर और आत्मा के बीच तीव्र विरोधाभास को विकसित किया। पौलुस ने पापी स्वभाव के कार्यों, या शरीर के मानवीय प्रयासों, की आत्मा के फल से तुलना की। गलातियों अध्याय 5 पद 19 से 21 में उसने शरीर के कार्यों के बारे में लिखा: व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, और लीलाक्रीड़ा। परन्तु गलातियों अध्याय 5 पद 22 और 23 में वह आत्मा के फल के बारे में बताता है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम।

झूठे शिक्षक लोगों को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि शरीर के कार्यों के द्वारा वे खतना करा सकते हैं, और वे धार्मिक जीवन जीने की सामर्थ पा सकते हैं। परन्तु जैसे पौलुस ने यहाँ दिखाया, मानवीय प्रयास केवल पाप को उत्पन्न कर सकता है। योएल अध्याय 2 पद 28 एक भविष्यद्वाणी है जो स्पष्टत: अभिव्यक्त किया कि आने युग के दौरान परमेश्वर अपने आत्मा को इस प्रकार उण्डेलेगा जैसा उसने पुराने नियम में नहीं किया था:

> "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।" *(योएल 2:28)*

पवित्र आत्मा मसीह के आने से पहले भी विश्वासियों के साथ उपस्थित था, और उसने विश्वासियों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए सामर्थ दी थी। परन्तु उस समय उसकी महान भरपूरी और विशेष वरदान, केवल कुछ अपवादों के साथ, भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं जैसे सीमित संख्या के लोगों के लिए थे। इस अर्थ में, पुराने नियम में पवित्र आत्मा की उपस्थिति कम नाटकीय और अद्‌भुत थी। परन्तु योएल ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाले युग में पवित्र आत्मा हर वर्ग और समूह के विश्वासियों पर उण्डेला जाएगा। और जैसा हम प्रेरितों के काम अध्याय 2 में देखते हैं, पिन्तेकुस्त के दिन योएल की भविष्यद्वाणी पूरी होनी शुरू हो गई। उस समय, परमेश्वर अपने सारे लोगों को अपने आत्मा को नाटकीय रूप में उण्डेलने लगा, यह संकेत देते हुए कि आने वाले युग की आशा एक यथार्थ बन चुकी थी।

परन्तु गलातिया में, झूठे शिक्षकों ने गलातियों को निर्देश दिया था कि वे धार्मिक जीवन जीने के लिए अपने मानवीय प्रयासों पर भरोसा रखें, जो इस बात का संकेत है कि वे नये नियम काल में आत्मा के वरदान और सामर्थ का इन्कार करते थे। वे पवित्र आत्मा की महान आशीष को पहचानने में चूक गए थे जिन्हें मसीह लाया था जब उसने आने वाले युग का शुभारम्भ किया था। प्रत्युत्तर में, पौलुस ने गलातियों को याद दिलाया कि जो मसीह के हैं

उनमें पवित्र आत्मा अपनी सामर्थ की भरपूरी के साथ पहले से ही है। जब मसीह के अनुयायी आत्मा की सामर्थ पर भरोसा रखते हैं; तो वह धार्मिकता के फल को उत्पन्न करने के लिए उनके अन्दर कार्य करता है।

नई सृष्टि

एक अन्तिम स्थान जहाँ हम पौलुस की अपने अन्तिम दिनों के सिद्धान्त पर अत्यधिक निर्भरता को देखते हैं वह है नई सृष्टि के विचार की उसकी अपील। यह सिद्धान्त उसकी पत्री के अतिरिक्त सन्देश में आता है। देखें पौलुस गलातियों अध्याय 6 पद 15 से 16 में इसे किस प्रकार बताता है:

> न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति और दया होती रहे। *(गलातियों 6:15-16)*

कई अर्थों में, ये वचन गलातियों की पुस्तक में प्रस्तुत सम्पूर्ण दृष्टिकोण का संक्षेपण करते हैं। पौलुस के विचार में, उसके विरोधी खतने को बहुत अधिक महत्व दे रहे थे क्योंकि मसीह के आने के साथ, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक व्यक्ति ने खतना करवाया है या नहीं। इसके विपरीत, महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति नई सृष्टि का हिस्सा बने।

आपको याद होगा कि पौलुस का एक विश्वास था कि युगान्त या अन्त के समय जो मसीह के पहले आगमन में आरम्भ हो चुका था उसमें मसीह ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक नई सृष्टि बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया था। यह नया क्रम परमेश्वर के लोगों के लिए इतनी विशाल आशीषों को लेकर आया कि इसने पूरी तरह से पुरानी सृष्टि के तरीकों को ढाँप लिया था। मसीह के आने से पहले के जीवन की रीतियों पर वापस लौटने की बजाय, नई सृष्टि में जीना प्रत्येक विश्वासी की मुख्य चिन्ता होनी चाहिए। पौलुस के दिनों से मसीह के लौटने के समय तक, मसीह के प्रत्येक अनुयायी की मुख्य चिन्ता नई सृष्टि में जीना होनी चाहिए। और जैसे पौलुस ने इसे बताया, जो इसे अपना चुनते हैं वे वास्तव में-परमेश्वर का इस्राएल हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा कैसे पौलुस ने गलातिया की कलीसियाओं में उत्पन्न समस्याओं का जवाब दिया। हमने गलातिया में झूठे शिक्षकों की पृष्ठभूमि, गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री की विषय सूची का अनुसंधान किया, और अन्ततः हमने देखा कि पौलुस गलातिया की समस्याओं को संबोधित करने में किस प्रकार युगान्त विज्ञान के अपने केन्द्रिय सिद्धान्त पर निर्भर था।

जब हम गलातियों को दिए पौलुस के प्रत्युत्तर पर मनन करते हैं, हम न केवल यह देखते हैं कि पौलुस ने किस प्रकार उनकी अपनी गम्भीर समस्याओं के बीच उनका मार्गदर्शन किया, बल्कि यह भी कि कैसे पौलुस आज हमसे बात करता है। आधुनिक मसीही समय-दर-समय गलातियों के समान जीते हैं। हम भूल जाते हैं कि मसीह के प्रथम आगमन ने मानवीय इतिहास को कितना अधिक बदल दिया है। गलातियों के समान हम असफलताओं और कुण्ठाओं की ओर मुड़ जाते हैं जैसे कि मसीह ने बहुत कम किया है। परन्तु पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र हम से बात करता है जैसे इसने गलातियों से बात की थी। मसीह हमें इस बुरे वर्तमान युग से बाहर लाया है ताकि हम आने वाले युग की आशीषों में जी सकें। जब हम अपने दिलों को नई सृष्टि की रीतियों की ओर मोड़ते हैं जो मसीह में आई है, तो हम पायेंगे कि मसीह का सुसमाचार वास्तव में शुभ समाचार है। मसीह इस संसार में उद्धार लाया है और हमें आज ही उस उद्धार में जीने का सौभाग्य दिया गया है।